धरती १४

'साम्राज्यवादी संस्कृति बनाम जनपदीय संस्कृति' केन्द्रित

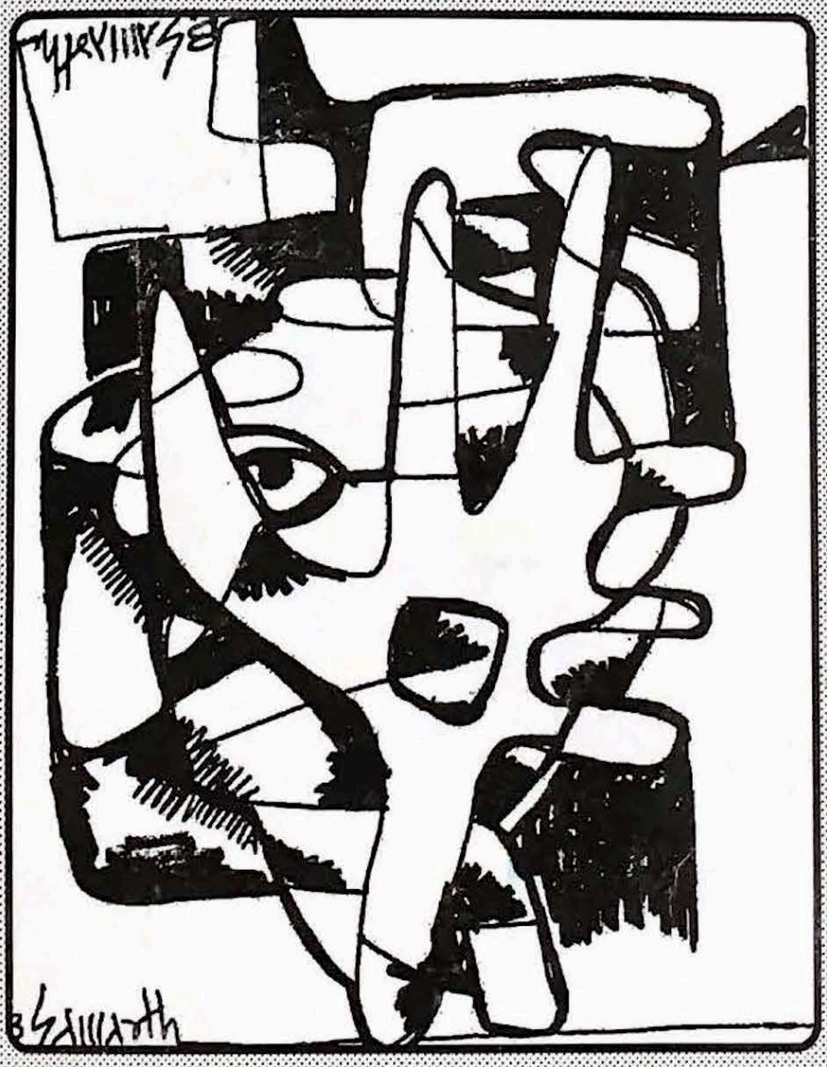

सम्पादक

शैलेन्द्र चौहान

धरती १४

सामाजिक एवं वैज्ञानिक साहित्य का
अनियतकालीन एवं अव्यवसायिक आयोजन

सम्पादक
शैलेन्द्र चौहान

सम्पर्क :
३४/२४२, प्रतापनगर, सेक्टर-३, जयपुर ३०३०३३ (राजस्थान)
मोबाइल : ९४१३३-५२८८३

ई-मेल :
dharati_aniyatkalik@webdunia.com

आवरण
भाऊ समर्थ

मुद्रक :
गुरुकृपा प्रिन्टर्स, कलावती पालीवाल मार्केट,
गुमानपुरा, कोटा ☎ : २३९१८९७

प्रकाशन/प्रबन्ध/स्वामित्व :
मीना सिंह
३४/२४२, प्रतापनगर, सेक्टर-३, जयपुर ३०३०३३ (राजस्थान)

सहयोग :
पच्चीस रुपये मात्र

धरती १४

अनुक्रम

सम्प्रेषण / शैलेन्द्र चौहान – 3

आलेख :

जन संस्कृतियाँ और साम्राज्यवाद / शिवराम – 4

आज का समय और जनपदीय संस्कृति / डॉ. क्षमा शंकर पाण्डेय – 21

भूमण्डलीकरण और वर्तमान सांस्कृतिक संकट / सोहन शर्मा – 26

सत्ता के प्रतिरोध में खड़ी है संस्कृति और शिक्षा / सुरेश पण्डित – 36

क्या नंदीग्राम का यथार्थ वर्चुअल है / महेन्द्र नेह – 46

हिन्दी लोक गीतों में सामराजियत के साये / सुल्तान अहमद – 55

लोक की अवधारणा / विजेन्द्र – 73

सत्यार्थी जी ने पहचानी थी..... / प्रकाश मनु – 81

हमारा समय और कविता का एक परिदृश्य / डॉ. जीवन सिंह – 100

कविताएँ :

अभिज्ञात – 105, शैलेन्द्र – 108, बालकृष्ण काबरा – 109

दिनकर कुमार – 111, आनन्द बहादुर – 112

जिलेदार सिंह – 113, मोहन कुमार डहेरिया – 114

समीक्षाएँ :

दलित चेतना के विविध आयाम / शिव बाबू मिश्र –116

संघर्ष की नई ऊर्जा / शिव बाबू मिश्र –118

सम्प्रेषण

अपना धन, अपनी जमीन और अपना बल असमानुपातिक और असंगत रूप से बढ़ाते जाना एक आदिम सामंती अवधारणा (वृत्ति) है। इस अवधारणा में क्रूरता, बेईमानी और बर्बरता स्वभावत: अंर्तनिहित होती है क्योंकि यह कर्म सापेक्ष एवं प्रतिद्वंद्वात्मक है। आधिक्य किससे ? पड़ोसी से, भाई से या समाज के किसी अन्य व्यक्ति, समूह, संस्थान, कम्पनी या राष्ट्र से। इतिहास गवाह है कि कितना अधिक खून खराबा, अत्याचार और अनीति इस अवधारणा के चलते हुई है इसका अनुमान लगा पाना अकल्पनीय है। आदिम और बर्बर कबीले हों, देशी-विदेशी शासक आक्रांता हों या फिर उद्योग और पूँजी के गठजोड़ से उपजी औपनिवेशिक महत्वाकांक्षा हो या आज की वैश्विक पूँजी को बाजार और व्यापार के चमकीले, भड़कीले और भ्रामक माध्यमों से कुछ हाथों में समेट लेने की एक आदिम वहशियाना साजिश हो, सदैव एक हैवानियत, बर्बरता और धोखेबाजी यानि छल, कपट, विद्वेष व असंवेदनशीलता ऐसे सामराजी नुमाइंदों में पर्याप्त मात्रा में मौजूद रहे हैं। इस बदनीयती और घिनौनी विकृति के महाजाल में लोक किस तरह पिसता, घुलता और मिटता रहा है इसका खुलासा अक्सर नहीं होता। और जो होता भी है वह शोषक सत्ता और साम्राज्यवादी ताकतों के पक्ष में बतौर सुरक्षा वाल्व होता है। ईमानदार कोशिशों को दबाया और अनदेखा किया जाता है। शासक सत्ता के दलाल उन पर हँसते पाये जाते हैं और साजिशें रचने के एवज में उपकृत और सम्मानित होते हैं। साहित्य, संस्कृति और कलाओं के क्षेत्र में भी यही सब कुछ होता है, हो रहा है। शिक्षा तो पूर्णरूपेण उद्योग/व्यवसाय की शक्ल अख्तियार कर चुकी है। 'वेलफेयर स्टेट' अपनी राजनीतिक कुटिलता के दम पर व्यवसायिक-अपराधी राज में तब्दील हुए हैं जहाँ लोक, मात्र शोषण और उपभोग की चीज है। वह निरा संसाधन है उत्कृष्ट गुणों से सम्पन्न कोई